व्यंग्य यात्रा

सार्थक व्यंग्य की रचनात्मक त्रैमासिकी

वर्ष : 19 अंक : 75

अप्रैल-जून-2023

संदीप राशिनकर

त्रिकोणीय में-
सुरेश कांत का आत्मकथ्य, रचनाएं
एम.एम. चंद्रा से संवाद
नरेंद्र कोहली, प्रेम जनमेजय, हरीश नवल
वीरेंद्र नारायण झा और चित्रगुप्त के आलेख/टिप्पणियां

इस अंक में-
पाथेय में- बालकृष्ण भट्ट, उग्र और [illegible] शर्मा
विमर्श में- अरविंद तिवारी, देवेंद्र गुप्ता, सुशील त्रिवेदी
गद्य व्यंग्य- विश्वनाथ सचदेव, श्रीकांत चौधरी, शशिकांत शशि,
अरविंद विद्रोही, रामस्वरूप दीक्षित, हरिशंकर राठी आदि
पद्य व्यंग्य- यश मालवीय, विष्णु नागर, सुभाष राय, रविनंदन सिंह
वशिष्ठ अनूप, विज्ञान व्रत, चंद्रेश्वर और लालित्य ललित आदि
'हिन्दी व्यंग्य में नारी' पर परिशिष्ट, इधर जो मैंने पढ़ा

मूल्य ₹ 20

विश्व पुस्तक मेला-2023 के मंच पर व्यंग्य यात्रा के 'हिंदी व्यंग्य में नारी स्वर' का लोकार्पण

राजकमल के स्टाल पर यशवंत व्यास की चर्चित पुस्तक 'कवि की मनोहर कहानियां' के संशोधित संस्करण एवं मलय जैन के व्यंग्य संकलन 'हलक में दरोगा' का लोकार्पण चर्चा

' 'प्रभात प्रकाशन' के स्टाल पर प्रेम जनमेजय की 'सींग वाले गधे' रत्नेश्वर की 'हिमयुग में प्रेम' तथा किताबवाले स्टाल पर गिरीश पंकज के उपन्यास 'यह घर हुआ बेगाना' का लोकार्पण।

'वीणा' के संपादक राकेश शर्मा 'पं. ब्रजलाल द्विवेदी स्मृति अखिल भारतीय साहित्यिक पत्रकारिता 2023 सम्मान, फारूक आफरीदी एवं अतुल चतुर्वेदी राजस्थान अकादमी के सम्मान से सम्मानित।

सूर्यनाथ सिंह एवं राधावल्लभ त्रिपाठी को क्रमशः हिंदी और संस्कृत भाषा में साहित्य अकादमी के बाल साहित्य पुरस्कार घोषित। बधाई! लेखक मंच पर पंकज सुबीर के चर्चित उपन्यास 'रूदादे सफ़र' रायपुर में 'परसाई व्यंग्य सम्मान' समारोह

'सरल संस्था' के गोरखपुर में आयोजन, पदमलाल पुन्नालाल बख्शी सृजन पीठ एवं नंद चतुर्वेदी फाउंडेशन के आयोजन। जबलपुर में व्यंग्यम के मंच पर 'व्यंग्य यात्रा' लोकार्पित।

व्यंग्य यात्रा

सार्थक व्यंग्य की

रचनात्मक त्रैमासिकी

अप्रैल-जून 2023

वर्ष-19 अंक-75

एक अंक : 20 रुपए

पांच अंक : सौ रुपए

डिजिटल रूप में NotNul पर उपलब्ध

neelabhsrivastav@gmail.com

सहयोग राशि 'व्यंग्य यात्रा' के नाम से ही भेजने का कष्ट करें।

संपादक

प्रेम जनमेजय

73, साक्षर अपार्टमेंट्स
ए-3 पश्चिम विहार
नई दिल्ली-110063

फोन : 011-470233944
मोबाइल : +91-9811154440

ई-मेल-
yatravyangya@gmail.com
premjanmejai@gmail.com

आवरण : संदीप राशिनकर की कलाकृति पर आधारित

रेखाचित्र : संदीप राशिनकर

कानूनी सलाहकार (अवैतनिक)
एडवोकेट कुलदीप आहूजा
उच्च न्यायालय

प्रबंध सहयोग
राम विलास शास्त्री
मोबाइल : +91-9911077754
+91-8920111592

'व्यंग्य यात्रा' में प्रकाशित लेखकों के विचार उनके अपने हैं। विवादास्पद मामले दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे। संपादन एवं संचालन पूर्णत: अवैतनिक और अव्यावसायिक।

अनुक्रम

आरंभ 1-3

चंदन घिसें 4-7

पाथेय - 8-10
बालकृष्ण भट्ट- वकील 8
पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र'- मैं लेखक से प्रकाशक क्यों बना? 9
यज्ञ शर्मा- शादी के बाजार में 10

चिंतन 11-18
अरविंद तिवारी- समकालीन व्यंग्य लेखन की चुनौतियां 11
देवेंद्र गुप्ता- व्यंग्य का निर्धारण 15
सुशील त्रिवेदी- वर्तमान समय में व्यंग्य की आवश्यकता 17

गद्य व्यंग्य 19-48
विश्वनाथ सचदेव- सड़काऊ कविता 19
रामदेव धुरंधर- गद्य क्षणिकाएं 20
श्रीकांत चौधरी- लोकतंत्र के श्मशान में... 21
शशिकांत सिंह 'शशि'- रैन बसेरा 28
अरविंद विद्रोही- मुंह झौसा लोकतंत्र 32
पी एस सूदन- गधा भी जेल में 32
रामस्वरूप दीक्षित- व्यंग्य लिखने के कारण 33
दिनेश अग्रवाल- पुनर्जन्म 34
हरिशंकर राढ़ी- गालीवाद के साहित्यिक-सामाजिक सरोकार 35
संजीव जायसवाल 'संजय'- सापों का नेवलीकरण 37
सुधीर ओखदे- लघु व्यंग्य 38
राजशेखर चौबे- पत्रकार का साक्षात्कार 39
श्याम सखा 'श्याम'- बदबू, बनाम... 39
अशोक भाटिया- लघु व्यंग्य 40-41
ललन चतुर्वेदी- बुद्धिजीवी और गधे 42
समीर लाल 'समीर'- एवं में सुतं- ऐसा मेरे द्वारा सुना गया 43
ऋषभ जैन- चावला'ज का उन्नयन 44
मुकेश पोपली- तोहफा वही जो तोशाखाना न जाए 46
विनोद कुमार विक्की- ...और पुल पिघल गया 47
सुशीलकुमार फुल्ल- रिकवरी एजेंट 48
अनिल किशोर सहाय- अथ ईंट कथा 48

पद्य व्यंग्य 49-60
यश मालवीय- नवगीत, गजल 49
विष्णु नागर, मुकेश भारद्वाज ओम निश्चल 50
सुभाष राय 51
रविनंदन सिंह के दोहे 51
राजेंद्र प्रसाद पांडेय- मुस्कराइये जनाब, माइक 52
वशिष्ठ अनूप की बेबाक गजलें 53
विज्ञान व्रत और राकेश अचल की गजलें 54
राजेंद्र वर्मा, गुरविंदर बांगा, देवमणि पांडेय 55
अंकित पाण्डेय- घर दूर है साहब 56
चंद्रेश्वर 57
अशोक अंजुम, सूरज कपूर, सुनील जसपा 58
लालित्य ललित, सतीश 'बब्बा 59
गोपीकृष्ण बूबना, संजीव कुमार 60

त्रिकोणीय 61-79
परिचय 61
अन्वेषक व्यंग्यकार- प्रेम जनमेजय 62
सुरेश कांत- न प्रेम-मार्ग, न ज्ञान मार्ग, बल्कि सुमार्ग 63

सुरेश कांत की व्यंग्य रचनाएं
'ब से बैंक' का अंश 66
अगली बार अपनी सरकार 68
खलील खाँ अब क्यों नहीं उड़ाते फाखता? 69
सुरेशकांत से एम.एम. चंद्रा का संवाद 70
नरेन्द्र कोहली- सुरेश कथा के मध्य में से... 73
वीरेन्द्र नारायण झा- व्यंग्य का बेजोड़ खिलाड़ी 74
हरीश नवल- देखन में छोटे लगे... 76
चित्रगुप्त- सुरेश जी का लेखन अनूठा है 77

परिशिष्ट : हिंदी व्यंग्य में नारी स्वर 80
अर्चना चतुर्वेदी- व्यंग्य में नारी स्वर की बात 80
विवेक रंजन श्रीवास्तव- महिला व्यंग्यकारों का अवदान 81
हंसा दीप- भिंडी बाजार 83
अनिता श्रीवास्तव- गरीब की रजाई 85
इंद्रजीत कौर- पुरुष सशक्तिकरण वाया फिल इन द ब्लैंक्स 86
वत्सला पांडेय- प्रपोज डे 87
शशि गोयल- इंसान कहीं के 88
नियति सप्रे- एक ख्याल छोटा-सा 90
दीप्ति सारस्वत 'प्रतिमा'- मेहनत का हासिल 92
संगीता कुमारी- बुनियादी न्याय 94
रंजना जायसवाल- मिडिल क्लास...हो कौन आप 95
ललिता जोशी- विसंगति बनाम अधिकार 96
सीमा जैन 'भारत'- तुम क्यों नहीं 97
उमा झुनझुनवाला- किस्से 99
दमयंती शर्मा 'दीपा'- आहत मन के दोहे 99
शैलजा सक्सेना- मैं नहीं तो कौन... 100
रत्ना वर्मा- मिसेज पंजवानी और उनका बुलडॉग 101
सुमन ओबेरॉय- हेलमेट और चालान 103
अनुपमा अनुश्री- डूबे-अनडूबे 104
पारमिता षडगीं- बापू का भारत 105
शेफाली कपूर- पूछो मत 105
पूजा गुप्ता- ...खाओ सब के भाग्य का 106
जया आनंद- ये मुआ स्टेट्स 107
लता शर्मा- ऑत कुतूर 108
योजना साह जैन- कहानी 'ऑनरेरी कौसा' डॉक्टरेट की 109
प्रभा मुजुमदार- त्रिशंकु फिर से 111
विनीता शुक्ला- दास्तान-ए-छछूंदर 113
रेखा शाह आरबी- नरकलोक में सीट कम 116

इधर जो मैंने पढ़ा 117
प्रेम जनमेजय- 'सृजन सरोकार' ममता कालिया अंक 117
जसविन्दर कौर बिन्द्रा- रूदादे-सफर न जीवन.... 118
कृष्ण बिहारी पाठक- ...आईना दिखाती कृति 120
धर्मपाल महेंद्र जैन- ...सहज-सरल संवाद 121
वंदना वाजपेई- शंख में समंदर 122
विवेक रंजन श्रीवास्तव- गोलगप्पे खाने जैसा मजा 123
ज्ञान चतुर्वेदी- ताजा बयार से व्यंग्य 123
शशिकांत सिंह शशि- हलक का दारोगा ... 124
ममता कालिया- मीना झा का पहला उपन्यास 125
प्रमोद त्रिवेदी- प्रताप सहगल के रंग मंथन पर 125
प्रेम जनमेजय- अपनी लेखकीय पगडंडी पर एकला... 126
नित्यानंद श्रीवास्तव- समय की कोख से... 127
भांकर लाल वाशिष्ठ- फर्जी की जय... 128
कमलेश भारतीय- जीवन की आग पीकर... 129
समीक्षार्थ प्राप्त कुछ कृतियां 129
भावना गौड़- चिंता जताती 'यत्र तत्र सर्वत्र' 130

समाचार 131-136

अब आप

आर.टी.जी.एस.

द्वारा 'व्यंग्य यात्रा' को अपना आर्थिक सहयोग दे सकते हैं।

खाताधारक का नाम : व्यंग्य यात्रा
बैंक का नाम : केनेरा बैंक
शाखा- पश्चिम विहार, ए-ब्लाक
खाता संख्या : 3223201000092
IFSC Code : CNRB0003223

आरंभ

विरोध विसंगत समय को नपुंसक होने से बचाता है। हमारे देश के पिछहत्तर वर्षीय इतिहास में जब भी समय विसंगत हुआ है शब्द विरोध में उतरे हैं। विरोध कठिन कर्म है। कठिन समय में, अधिकांश कछुए मौन का कवच धारण कर अपने खोल में स्वयं को सुरक्षित समझने का भ्रम रचते हैं। वे भूल जाते हैं कि जब अहंकारी सेनाओं के बूट रौंदते हैं तो कछुए पहले रौंदे जाते हैं और वे अनाम रह जाते हैं। लंका में भी अधिकांश कछुए ही तो थे। सत्ता का अहंकार अपनी लंका बनाता है और उसमें विरोध के स्वर को लात मारता है। यही लात विरोध को ताकत और साहस देती है। हर सत्ता, जनकल्याण के चेहरे के साथ, हाथ जोड़े प्रणाम की मुद्रा में होती है! पर कुछ सत्ताएं दिनोंदिन जयकार के बढ़ते स्वरों की आदी हो जनकल्याण के स्वरों के लिए बहरी हो जाती हैं। ऐसे में विसंगत समय जन्म लेता है। बहरी सत्ता को विरोध का स्वर आक्रमण लगता है। सत्ता का दिनोंदिन बढ़ता नशा सत्ताधारी को निरंकुश करता है। वह अपने समय के विरोध को नपुसंक करने के लिए भयजाल बुनता है। कछुए अपने खोल में घुस जाते हैं। विरोध की चिंगारियां जन्म लेने लगती हैं। ये चिंगारियां एक बड़ी आग बनती हैं। यह बड़ी आग जब लंका का जलना निश्चित कर देती है तो अंततः सत्ता जाने का भय सत्ताकर्मी को अश्वत्थामा बना देता है। वह क्रूरता की हर सीमा को लांघता है। हमारे देश का इतिहास बताता है कि जब भी प्रजातांत्रिक मूल्य खतरे में होते हैं, अंततः...। इन दिनों शब्द फिर विरोध में हैं। चिंगारियां जन्म ले रही हैं।

आदि कवि की करुणा के पहले शब्द बहेलिए के विरोध में ही तो थे। **विसंगत समय में कविता ने विरोध को नपुसंक होने से बचाया है।** न...न...न कछुआधारी कवि, कविता के नाम पर आप अपने कॉलर मत खड़ा करें। आप तो दूधों नहाएं पूतों फलें। जनता को मनोरंजन की अफीम पिलाने का अभियान जारी रखें। आप तो देश में ही नहीं विदेश में भी 'साहित्य सेवा' करें और जैसे सेवा के नाम पर सत्ताकर्मी मेवा वसूल करते हैं, आप भी करें। आप जैसों से सीकरी को बहुत काम है। आपने तो ऐसे सोल के ब्रेंडेड जूते पहने हैं जो सीकरी की सीढ़ियां चढ़ते हुए घिसते नहीं हैं। घिस भी जाएं तो बादशाह सलामत का इनाम-इकराम इतनी मल्हम लगा देता है कि वे पुनः घिसने के लिए कमर नहीं कमरा तक कस देता है।

अक्सर, एकांगी विचारधारी सोशल मीडिया को निर्थक एवं बकवास कह कोसते हुए नजर आते हैं। वे भूल जाते हैं कि फेसबुक आदि तो एक मंच है जिसका प्रयोग आपके लक्ष्य पर निर्भर करता है। आप बकवास परोसेंगे तो बकवास होगा और सार्थक शब्द देंगे तो चिंतन होगा। यह तो दर्पण की तरह साफ है जिसके सामने जो है वही दिखाई देगा। यह तो अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बन चुका है। नहीं होता तो इसकी भी स्वतंत्रता से छेड़-छाड़ क्यों होती? इस मंच पर हम अपने समान विचारधारियों से सीधे जुड़ते हैं। मैं इसे अपनी सोच को अभिव्यक्ति देने का ऐसा मंच मानता हूं जिसमें किसी ऐसे संपादक का कम दखल है और मुझे स्वर देने के लिए संपादक को मालिक की ओर नहीं देखना पड़ता है। यह मंच आजकल विरोध को दबाने का हथियार है तो विरोध की चिंगारी को जन्म देने की जन्मभूमि भी। इन दिनों कबीरी धार की निर्भीक कविता और टिप्पणियां मेरे चिंतन को समृद्ध कर रही हैं। हमारे विसंगत समय में, बिना व्यंग्य कविता का अहंकार पाले, सामायिक राजनीतिक विसंगतियों पर निरंतर काव्यात्मक प्रहार हो रहे हैं। इस दृष्टि से मुझे गद्य व्यंग्य पिछड़ा हुआ लगता है- परसाई और जोशी के समय से बहुत पिछड़ा। प्रहारक हथियार दिल बहलाव की चाश्नी में लिपटा हुआ है। व्यंग्य में यदि विरोध का साहस नहीं तो वह नपुंसक है। फेसबुक पर मैं अक्सर, विरोध में उतरी, प्रहारक कबीरी कविता को एक खोजी की तरह पढ़ता हूं। पिछले दिनों जो पढ़ा, उनमे से कुछ आपके साथ पद्य व्यंग्य के पन्नों में साझा कर रहा हूं। अधिकांश कविताएं मैंने फेसबुक से उधर ली हैं और उन कवियों की उधार ली हैं जिन्होंने मुझे बिन पूछे 'व्यंग्य यात्रा' में उद्धृत करने का अधिकार दिया हुआ है।

अच्छा लगता है जब व्यंग्यकार के तमगे के बिना, व्यंग्य के शुभचिंतक, व्यंग्य को लेकर अपनी चिंता व्यक्त करते हैं। ये चिंताएं बिना लाग-लपेट के होती हैं। इस बार **चिंतन में** व्यंग्य को जीने वाले अरविंद तिवारी तो हैं ही, व्यंग्य के शुभचिंतक सुशील त्रिवेदी और देवेंद्र गुप्ता भी हैं। और केवल 'व्यंग्य यात्रा' के सुशील त्रिवेदी और देवेंद्र गुप्ता शुभचिंतकों का चिंतन ही नहीं, व्यंग्यकार का तमगा विहीन विश्वनाथ सचदेव अपनी व्यंग्य रचना व्यंग्य यात्रा को देते हैं तो पत्रिका किसी मुग्धा नायिका-सी फूली नहीं समाती है।

सुरेश कांत अन्वेषक व्यंग्यकार है। अपनी इसी लेखकीय प्रकृति के कारण वे व्यंग्य के नए विषयों से मुठभेड़ करते हैं। अपने युवा दौर में जब उनके सहयात्री परसाई, जोशी और त्यागी की त्रयी से प्रभावित, बैठे-ठाले राजनीति, पुलिस, साहित्य आदि क्षेत्रों में विचरण कर रहे थे वे अन्वेषण में थे। इसी कारण वे 'राग दरबारी' के आतंक से आतंकित नहीं हुए। आज भी कुछ व्यंग्यकार शिवपालगंज की गलियों में विचरण कर रहे हैं। 'जॉब बची सो...' सुरेश कांत के एक नए अन्वेषण का परिणाम है। कॉरपोरेट जगत की बेशर्मियों, बदमाशियों, शोषण प्रवृत्ति को उजागर करने वाला ये व्यंग्य उपन्यास अलग ज़मीन पर लिखा गया है। मुझे नहीं लगता कि इस जमीन पर कोई व्यंग्य उपन्यास लिखा गया या लिखा जाएगा। 'ब' से बैंक में भी दफ्तर था पर वो सरकारी था, यहां जो दफ्तर है वो मल्टीनेशनल की जेल-सा है।

सुरेश कांत ने 'ब से बैंक' के माध्यम से व्यंग्य में नवीन विषय का द्वार खोला था। **इस बार का त्रिकोणीय सुरेशकांत** के विपुल रचनाकर्म की थोड़ी-सी बानगी दें आपकी प्यास जगाने वाला है।

'व्यंग्य यात्रा' की **'हिंदी व्यंग्य में नारी स्वर'** वाली सोच को उत्साहजनक समर्थन मिला। पिछले अंक में उन 25 व्यंग्य लेखिकाओं की रचनाएं ली गईं थीं जिनका एक व्यंग्य संकलन प्रकाशित हो चुका है। उनसे स्वयं ही अपनी श्रेष्ठ व्यंग्य रचना का